International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

अटल बिहारी वाजपेयी की गठबंधन राजनीतिक सक्रियता की भूमिका का अध्ययन

USHA KUMARI

Research Scholar Sri Satya Sai University of Technology and Medical Sciences Sehore M.P

DR. RAFAT AFROZ KHAN

Research Supervisor Department of Political Science Sri Satya Sai University of Technology and Medical Sciences Sehore M.P

सारांश

प्रत्येक बार गठबंधन सरकारों का निर्माण किया गया परंतु कोई भी सरकार स्थायी एवं स्वनिर्णय में सक्षम नहीं हुई। घटक दलों के क्षुद्र स्वार्थों एवं अन्तर्विरोधों के कारण सभी सरकारे विवादित रही। ऐसी स्थिति में 1999 ई. में बनी वाजपेयी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार ने स्थिर एवं विकासशील सरकार की नींव रखी प्रस्तुत शोध प्रबंध यह देखने का प्रयास किया है कि वर्तमान समय में भारतीय राजनीति में इसका क्या महत्व है। वर्त्तमान परिस्थिति को देखकर साफ तौर पर कहा जा सकता है कि भारतीय राजनीति में एक दल की प्रभूता समाप्त हो गई है। यह कहना बिल्कुल अतिश्योक्ति नहीं होगी कि केन्द्रीय स्तर पर मिली–जुली सरकार का शासन अब एक सामान्य नियम हो गया है। अतः गठबंधन की सरकार को चलाने के लिए वाजपेयी के सिद्धांत और विचार आगे की राजनीति में एक उपयोगी सिद्धा ंत साबित रहा है। वाजपेयी के गठबंधन सरकार एवं इसके पूर्व एवं बाद में गठित गठबंधन सरकारों के तुलनात्मक अध्ययन से निकले तथ्यों के आधार पर भविष्य में गठबंधन सरकार चलाने में इस शोध–प्रबंध का विशेष महत्व एवं प्रासंगिकता होगी।

मुख्यशब्द– अटल बिहारी वाजपेयी, गठबंधन, राजनीतिक सक्रियता, विकासशील सरकार, भारतीय राजनीति

प्रस्तावना

अटल बिहारी वाजपेयी ने 1940 ई0 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की सदस्यता ग्रहण की। इनकी शिक्षा–दीक्षा डी0ए0वी0 कालेज कानपुर में हुई। वहीं इनका चुनाव 'आर्य कुमार सभा' के लिये, जो आर्य समाज के युवक वर्ग का प्रतिनिधित्व करती थी, 1944 ई0 में हुआ। वे स्नातक बनने के

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

पश्चात् संघ से संबंधित मासिक पत्रिका 'राष्ट्रधर्म' के सम्पादक बनाये गये तथ्ज्ञा लखनऊ से प्रकाश्तिा साप्ताहिक पत्रिका 'पांचजन्य' का भी सम्पादन उन्हीं को सौंपा गया। 1942 से स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलन में गिरफ्तार किये गये। 1940 से निरन्तर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता बने रहे। 1951 में भारतीय जनसंघ कीर स्थापना काल से ही जनसंघ में सम्मिलित हुए।

अटल बिहारी वाजपेयी का राजनीति में प्रेवश–

सन् 1957 में लोकसभा का दूसरा आम होने जा रहा था। भारतीय जनसंघ अपनी जड़ें जमाने में लगी थी। डॉ0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी दिवंगत हो चुके थे। न प्रसिद्ध नेतृत्व था, न विस्तृत जनाधार। चुनाव लड़ने के लिए उम्मीद्वार मिलना भी कठिन था। कौन गांठ से खर्च कर जमानत जब्त कराए। फिर भी चुनाव तो लड़ना ही था। श्री अटल बिहारी वाजपेयी के लिए तीन चुनाव क्षेत्रों बलरामपुर से लड़ाने का फैसला किया गया। लखनऊ से लोकसभा का उपचुनव लड़ चुके थे। जीतने का सवाल ही नहीं था। हां, वोट अच्छे मिले थे। पार्टी का हौसला बढ़ा था। लखनऊ से फिर से लउ़ने का तय हुआ। मथुरा में कोई ढंग का उम्मीद्वार नहीं मिल रहा था। जिन्हें ठीक–ठाककर मुश्किल से लउ़ने को तैयार भी किया गया, वे सब विधानसभा का चुनाव लड़ना चाहते थे। एक खर्चा कम था। ग्वालियर और भिंड के बीच तो और भी छोटी लाइन थी। गाडि.यां आराम से चलती थी। और पहुँचने में काफी समय लेती थी। उसी टिकट पर, उन्हीं पैसों में, लंबी यात्रा का आनंद मिलता था। वे गोंडा में गाड़ी में चढ़े और संकरी–सी बर्थ पर बिस्तर बिछाकर सो गये। आंख खुली तो गाड़ी एक स्टेशन पर खड़ी थी। खिड़की खोलकर देखा तो सैकड़ों कौए स्टेशन पर लगे पेड़ों पर कांव–कांव कर रहे थे। सारा आकाश गूंज रहा था। पूछने पर ज्ञात हुआ कि कौवापुर स्टेशन है। कौवापुर और इंटियाठोक के बीच में स्थित बलरामपुर स्टेशन नेपाल जानेवाले यात्रियों के लिए थी,जो 1947 में उत्तर प्रदेश का अंग बनी। भारतीय जनसंघ के रूप में लोगों को कांग्रेस का एक नया विकल्प मिला। लोग आकृष्ट हुए। जनसंघ की राष्ट्रवादी विचारधारा ने उन्हें प्रभावित किया। राजतंत्र समाप्त हो गया था, किन्तु जमींदारी कायम थी। काफी जमींदार मुसलमान थे, जो आर्थिक उत्पीड़न के साथ धार्मिक भेदभाव भी करते थे। अपने चुनाव दौरे में उन्हें अनेक ऐसे क्षेत्र मिले, जहां घड़ियाल और शंख बजाना मना था। स्वतंत्रता के बाद इस स्थिति में परिवर्तन हुआ था, किन्तु परिवर्तन की लहर दूरदराज के क्षेत्रों तक नहीं पहुंची थी। जमींदारों से आतंकित छोटे और मझोले किसान भारतीय जनसंघ के साथ जुड़े।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

नतीजा यह हुआ कि मैं बलरामपुर से लोकसभा के लिए निर्वाचित कर लिया गया। वहां कुल 482800 मतदाता थे, जिनमें से 226848 मतदाताओं ने मताधिकार का उपयोग किया। मुझे 118350 मत मिले। कांग्रेस के श्री हैदर हुसैन लगभग 10000 मतों से चुनाव हार गए। यदि कांग्रेस का उम्मीद्वर हिन्दू होता तो शायद मैं चुनाव न जीत पाता। श्री हैदर हुसैन लखनऊ के नामी वकील थे। लेकिन उनके लिए बलरामुपर में लोगों से संपर्क बनाए रखना सरल नहीं था। वे कांग्रेस के बल पर चुनाव जीते थे। कांग्रेस–विरोधी भावना बढ़ी रही थी। अतः अटल जी को चुनाव में सफलता मिली।

अटल बिहारी वाजपेयी का प्रथम काल–

इन्दौर में गत सितम्बर मास में आयोजित भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में पंजाब, बिहार, उत्तर प्रदेश तथा पश्चिम बंगाल में होने वाले मध्यावधि चुनावों के लिए जनसंघ ने अपनी व्यूह रचना निश्चित की थी। चुनाव के परिणाम आशाओं के विपरीत ही रहे। पंजाब में शक्ति बढ़ने के बजाय घटी। बिहार की विधान सभा में यद्यपि संख्या बढ़ी, तथापि प्रदेश प्रदेश में जनसंघ के लिए जैसा अनुकूल वातावरण था, उसके अनुसार वे सफलता प्रापत नहीं कर सकें। पश्चिम बंगाल में वे एक भी स्थान प्राप्त करने में असफल रहे। सबसे अधिक आघात उन्हें उत्तर प्रदेश में लगा,जहा ं विधान सभा में उनकी सदस्य संख्या आधी रह गई।

मध्यावधि चुनाव–

चुनाव में हार पर वाजपेयी जी ने कहा था कि–25 मध्यावधि चुनाव में अपनी पराजय के कारणों पर हमें गम्भीरता से विचार करना होगा और भविष्य के लिए योजना करनी होगी। यद्यपि हर प्रदेश में हमारी पराजय के कारण अलग–अलग हैं, किन्तु एक सामान्य बात हर जगह दिखाई देती है कि हम यद्यपि नये स्थान प्रापत करने में सफल हुए हैं, किन्तु अधिकांश पुराने स्थान हमारे हाथ से निकल गये हैं।

संक्रमण काल–

आन्तरिक एकता के लिएखतरा मुख्यतः उन शक्तियों से है जो विकेन्द्रीकरण के बाद में या तो विघटन को प्रोत्साहन दे रही हैं, या केन्द्र को दुर्बल बनाने के प्रयत्न में योजनाबद्ध रीति से संलग्न है। हमें उनके प्रयत्नों को विफल करना होगा। हमें उन तत्वों को भी निरूत्साहित करना होगा जो एकता के नाम पर एक रूपता लादना चाहते हैं और शासन में जनता को अधिकाधिक भागीदार

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

बनाने के यत्नों को सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। इस प्रकार केन्द्र और राज्यों के संबंध, राज्यपालों की नियुक्ति, वित्तीय संबंधों की पुनर्रचना, वर्तमान आर्थिक स्थिति, खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता, स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था, स्वदेश का पुनर्जागरण, क्षेत्रीय असंतुलन, तेलंगाना के प्रति अन्याय, जम्मू–लद्दाख के प्रति अन्याय, छोटे राज्यों का प्रश्न, पहाड़ी राज्य का विरोध क्यों, मलयपुरम जिले का निर्माण, धर्मान्तरण के लिए विदेशी धन, बदलती हुई विश्वस्थिति के सन्दर्भ में श्री वाजपेयी ने कहा कि ''अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थित जिस तेजी से बदल रही है, भारत की विदेश नीति के निर्माता और नियामक उसके साथ कदम मिलाकर चलने में अपने को अक्षम पा रहे है।

पंचवर्षीय योजना–

भारतीय जनसंघ ने अपने बम्बई अधिवेशन में चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के प्रारूप से असहमति प्रकट करते हुए यह मांग की थी कि योजना का पुनः निर्धारण करके उसे सच्चे अर्थों में स्वदेशी बनाया जाय, जिससे वह जनता की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में समर्थ हो सके और विकास के लाभों को जनसाधारण तक पहुंचा सके। शहरी सम्पत्ति की अधिकतम सीमा निश्चित करने के सुझाव पर विचार किया जाय और तय किया जाय कि इस संबंध में सभी प्रादेशिक कार्य समितियों की राय जानी जाय। इस संबंध में निर्णय पटना में दिसम्बर में आयोजित अखिल भारतीय अधिवेशन में किया जाय।

भारतीय जनसंघ का 16वां अखिल भारतीय अधिवेशन पर वाजपेयी जी–

इसी प्रकार भारतीय जनसंघ के 16वें अखिल भारतीय अधिवेशन में भाषण करते हुए अटल बिहारी वाजपेयी जी ने का ंग्रेस के विघटन, लोकतंत्र को खतरा, सामाजिक नियंत्रण बनाम राष्ट्रीयकरण, एकात्म मानववाद का पूर्ण दर्शन आदि पर अपने विचार प्रकट किये। उनके अनुसार जनसंघ समाजवाद को एक मत के रूप में नहीं मानता क्योंकि हम उसे नितान्त भौतिकवादी मूल्यों पर आधारति एक अपूर्ण तथा असंतुलित जीवनदर्शन मानते है ं साथ ही हमें भय है कि उसकी स्वीकृति से देश के सामने ''राज्यवाद'' का खतरा खड़ा हो जाता है, किन्तु समाजवाद में दलित तथा शोषित के प्रति जो चिन्ता है, अथवा सामाजिक न्याय तथा समानता के बारे में जो आग्रह है, उससे किसी का मतभेद नहीं हो सकता।

समाजवाद एवं अन्य समस्याओं पर अटल जी निम्न प्रकार कहते हैं–

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

समाजवाद के विरोधियों से हमारी अपील है कि वे समाजवाद के नाम से चौंकने के बजाय उसके सारे के विषय में विचार करें। जिस सीमा तक यह सार राष्ट की प्रवृत्ति, प्रतिभा तथा संस्कृति से मेल खाता है,उसका परित्याग नहीं होना चाहिए। जहां तक जनस ंघ का संबंध है, स्व0 पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने पुरूषार्थ चतुष्टय पर आधारित जिस एकात्म मानववाद का प्रतिपादन किया है, वह सर्वोदय तथा लोकतांत्रिक समाजवाद के सभी श्रेष्ठ तत्वों को समाविष्ट करता हुआ देश के आर्थिक तथा सामाजिक पुनर्निर्माण का एक समग्र तथा समुचित आधार बन सकता है। भूमि सुधारों की आवश्यकता, सीमा निर्धारण में विफलता, रेयतों तथा बटाईदारों के अधिकार, कृषिजन्य उद्योगों का जल, आदिवासी क्षेत्रों की स्थिति, ढेयर आयोग की सिफारिशें, नौकरियों में प्रतिनिधित्व, पूर्वाग्रह का परित्याग करें।

अस्पृश्यता का निवारण, केवल कानून बनाना अपर्याप्त, धर्माचायों से अपील, पिछड़ेपन में निहित स्वार्थ, विदेश नीति स्वाथ, विदेश नीति की विफलता, भरत में राष्ट्रीय अपमान, सेक्यूलरवाद का उपहास, अहमदाबाद के दंगे, पश्चिम एशिया संबंधी नीति का पुनर्निधारण, साम्प्रादायिक स्थिति, उपद्रवों का प्रारम्भ कैसे, अहमदाबाद के उप्रदव, प्रतिशोध लेना अनुचित, भारतीयकरण, सम्प्रदायवाद का पोषण सम्पत्ति संबंधी अधिकार, अल्पमत की सरकारें, लोकसभा के विघटन का प्रश्न, सरकारें संयुक्त और विभक्त, पश्चिम बंगाल की स्थिति, सरकार की विफलता का परिचायक है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी का द्वितीय काल–

15वें अखिल भारतीय अधिवेशा के अवसर पर भारतीय जनसंघ के अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 1969 के मध्यावधि चुनावों की समीक्षा करते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण में 25 दिसम्बर को कहा कि चुनाव के परिणाम हमारी आशा के अनुरूप नहीं रहे। पंजाब में हमारी शक्ति बढ़ने के बजाय घटी। बिहार की विधान सभा में यद्यपि हमारी संख्या बढ़ी है, तथापि प्रदेश में हमारे लिए जैसा अनुकूल वातावरण था, उसके अनुसार हम सफलता प्राप्त नहीं कर सके। पश्चिम बंगाल में हम एक भी स्थान प्राप्त करने में असफल रहे। सबसे अधिक आघात हमें उत्तर प्रदेश में लगा, जहां विधान सभा में हमारी सदस्य संख्या आधी रह गई।

अखिल भारतीय अधिवेशन–

अटलजी मध्यावधि चुनाव में जनसंघ की हार का कारण बताते हैं कि– मध्यावधि चुनाव में अपनी पराजय के कारणों पर हमें गम्भीरता से विचार करना होगा और भवष्यि के लिए योजना करनी

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

होगी। यद्यपि हर प्रदेश में हमारी पराजय के कारण अलग–अलग हैं, किन्तु एक सामान्य बात हर जगह दिखाई देती है कि हम यद्यपि नये स्थान प्राप्त करने में सफल हुए हैं, किन्तु अधिकांश पुराने स्थन हमारे हाथ से निकल गये हैं। स्पष्टतः हमारी पराजय का कारण यह नहीं है कि हमारे प्रति जनता के मन में कोई परिवर्तन हो गया है, अपितु यह है कि 1967 के आम चुनाव में जिन क्षेत्रों से हमारे सदस्य चुनकर गये थे, उनकी हम ठीक तरह से देखभाल नही ं कर सके। शासन में शामिल होने के कारण जहां जन–सम्पर्क की आवश्यकता और अधिकता बढ़ गई वहां हमार जन–सम्पर्क कम हो गया। संगठन में शिथिलता आ गई। कार्यकर्ता या तो आत्मविश्वास के अतिरेक से असावधान हो गये अथवा निराशा के शिकार होकर निष्क्रिय बन गये। चुनाव की पराजय के लिए सयाधना ें की कमी, जातिवाद का आधार, साम्प्रदायिक आधार पर मतदान, जनसंघ को अपना मिला–जुला निशाना बनाने की अन्य दलों की रणनीति को भी कुछ मात्रा में दोषी ठहराया जा सकता है,किन्तु हमारी हार के मुख्य कारण संगठनात्मक है। जहां हम आम चुनाव में पराजित हुए थे, वहां मध्यावधि चुनाव में विजयी होने तथा जहां 1967 में विजयी हुए थे, वहां 1969 में परास्त होने का भी यही रहस्य है कि हारे हुए स्थानों पर कार्यकर्ता कार्य में संलग्न रहे, जतबकि विजयी स्थानों पर कार्यकर्ता कार्य में संलग्न रहे, जबकि विजयी स्थानों पर आराम में निमग्न हो गये।

निष्कर्श

अटल बिहारी वाजपेयी की गठबंधन की अवधारणा, भावी भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के लिए मानक होगा?'' परीक्षण से निष्कर्ष मिलता है कि इसकी गठबंधन की अवधारणा भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के लिए मानक है क्योंकि इन्होंने विविधता में एकता स्थापित करने का प्रयास किया तथा गठबंधन में आने वाली समस्याओं को सरकार गठन के पहले सुलझा कर सरकार को स्थायित्व प्रदान किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अम्बेडकर, डॉ० बी० आर०: 'ड्राफ्ट कान्स्टीट्यूशन ऑल इण्डिया', नई दिल्ली, भारत सरकार, 1950

2. अरोड़ा, बलवीर ह्2002) : 'द पॉलिटिकल एण्ड पार्टी सिस्टम', द एमरजेन्स ऑफ न्यू कोलिशंस, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

3. रत्ना, अनुराग : 'कोलिएशन पॉलिटिक्स, ए न्युटर्न टु कन्सटिच्युशनल डेवलपमेंट ऑफ इंडिया', उप्पल पब्लिकेशन, नई दिल्ली

4. वाजपेयी, अटल बिहारी : 'संकल्प काल', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014

5. वाजपेयी, अटल बिहारी :'मेरी संसदीय यात्रा', खण्ड–1, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

6. कार्टर, जी०एम० एण्ड हर्ज, जे०एच० : गवर्नमेंट एण्ड पॉलिटिक्स इन द ट्वेंटिंथ सेंचुरी, न्युयार्क, फेडरिक ए प्रेजर, 1965

7. कोठारी, रजनी, 'पोलिटिक्स इन इंडिया', बोस्टन लिटल ब्राउन एण्ड कम्पनी, 1970

8. कोठारी,रजनी : 'दका ंग्रेस सिस्टम इन इंडिया', एशियन सर्वे, दिसंबर, 1964

9. कोठारी, रजनी : पिकंटीन्यूटी एण्ड चेंज इन द इंडियन पार्टी सिस्टमसि, एशियन सर्वे, नवंबर 1970, डब्ल्यू० एच० मॉरिस–जॉन्स, पोलिटिक्स मेनली इंडियन, ऑरियंट लौ ंगमैन, मींस, 1978

10. कोठारी, रजनी : पिभारत मे ं राजनीति : कल और आजसि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005

11. कुमार, डॉ० राजेश : 'सांसद अटल बिहारी वाजपेयी और लोकतंत्र',विशाल पब्लिकेशन, पटना

12. कौशिक, अशोक : 'राष्टन्नेय अस्मिता के पुरोधा अटल बिहारी वाजपेयी', अनिल प्रकाशन, दिल्ली

13. चक्रवर्ती, विधुत ;2006) : 'फॉरजिंग पावर : कोलीशन पॉलिटिक्स इन इंडिया',नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस

14. चन्द्र, विपिन : पिजे०पी० मोवमेंट एण्ड द इमरजेंसीसि, पेंगुइन रेन्डम हाउस, इंडिया

15. धटाटे, ना० मा० : 'मेरी संसदीय यात्रा', खण्ड–1, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014

16. धटाटे, ना० मा० : 'मेरी संसदीय यात्रा', खण्ड–1, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014

17. पी० वी० नरसिंहा राव, प्रधानमंत्री एपीसोड–20, ए०बी०पी० न्युज इन युट्यूब कॉम

18. पैटिक, एस० के० : 'द राइटिंग ऑन द वॉल'; साहनी, एन० सी०: 'का ंलिशन पॉलिटिक्स इन इंडिया', न्यु एकेडिमिक पब्लिशर्स कम्पनी, जला ंधर, 1971, पृ० 33

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

19. मिश्रा, आर० एन० : 'रिजनलिज्म एण्ड स्टेट पॉलिटिक्स इन इंडिया', आशिष पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, 1984, ऑफ पेंसिलवेनिया